

प्लास्टिक के खतरे से नपिटना

यह एडिटरियल 28/12/2021 को 'द हट्टू' में प्रकाशित "The Gaps in the Plan to Tackle Plastic Waste" लेख पर आधारित है। इसमें 'वस्तितारति नरिमाता उत्तरदायतिव' (EPR) वनियिमनों के मसौदे से संबद्ध समस्याओं और प्लास्टिक अपशषिट से नपिटने के मार्ग की अनय चुनौतियों के संबंध में चर्चा की गई है।

संदर्भ

समाज को प्रभावति करने वाली वभिनिन संवहनीयता चुनौतियों में से जलवायु परविरतन और प्लास्टिक अपशषिट वशिष रूप से उललेखनीय हैं।

इस संदर्भ में पर्यावरण मंत्रालय ने हाल ही में प्लास्टिक अपशषिट प्रबंधन नयिम 2016 के अंतर्गत वस्तितारति उत्पादक उत्तरदायतिव (Extended Producer Responsibility- EPR) वनियिमनों का मसौदा प्रकाशति कयिा है।

हालाँकयिे वनियिमन वशिष रूप से अनौपचारिक क्षेत्त्र के एकीकरण और वभिनिन प्रकार के प्लास्टिक के समावेशन के संबंध में एक प्रतगिामतिा को दरशाते हैं।

प्लास्टिक अपशषिट प्रबंधन के लयिे इस तरह के ढाँचे तभी प्रभावी हो सकते हैं जब वे मौजूदा तंत्र के साथ मलिकर प्लास्टिक अपशषिट प्रबंधन की समस्या को संबोधति करें, दुहराव (Duplication) को न्यूनतम करें और उपयुक्त नगिरानी तंत्र के साथ सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव पैदा करें।

प्लास्टिक अपशषिट और प्रबंधन

- **वैश्विक परदृश्य:** अगले 20 वर्षों में वैश्विक स्तर पर 7.7 बलियिन मीट्रिक टन से अधिक प्लास्टिक अपशषिट के कुप्रबंधन का अनुमान है, जो मानव आबादी के भार के 16 गुना के बराबर है।
 - 'सेंटर फॉर इंटरनेशनल एनवायरनमेंटल लॉ' की वर्ष 2019 की एक रपौरट के अनुसार वर्ष 2050 तक प्लास्टिक से ग्रीनहाउस गैस (GHG) का उत्सर्जन 56 गीगाटन से अधिक हो सकता है, जो शेष कार्बन बजट का 10-13% होगा।
- **भारत का अपशषिट उत्पादन और संग्रहण:** भारत सालाना 9.46 मिलियन टन प्लास्टिक अपशषिट उत्पन्न करता है, जसिमें से 40% प्लास्टिक अपशषिट का संग्रहण नहीं हो पाता।
 - केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) के अनुसार भारत प्रतदिनि लगभग 26,000 टन से अधिक प्लास्टिक उत्पन्न करता है और 10,000 टन प्रतदिनि से अधिक प्लास्टिक अपशषिट असंग्रहति रह जाता है।
 - भारत में उत्पादति समस्त प्लास्टिक का 43% पैकेजिग के लयिे उपयोग कयिा जाता है, जसिमें से अधकिंश एकल-उपयोग प्लास्टिक (Single-Use Plastic) हैं।
- **ड्राफ्ट EPR नोटफिकेशन- प्लास्टिक अपशषिट प्रबंधन के लयिे पहल:**
 - यह प्लास्टिक पैकेजिग सामग्री के उत्पादकों के लयिे वर्ष 2024 तक अपने सभी उत्पादों को संग्रहति करना अनविर्य बनाता है और सुनशिचति करता है कि इसका एक न्यूनतम प्रतशित पुनर्रनवीनीकरण के साथ-साथ उत्तरवर्ती आपूर्ति में उपयोग कयिा जाएगा।
 - इसने एक ऐसी प्रणाली भी नरिदषिट की है जहाँ प्लास्टिक पैकेजिग के नरिमाता और उपयोगकर्त्ता EPR प्रमाणपत्र प्राप्त कर सकते हैं और उनमें वयापार कर सकते हैं।
 - प्लास्टिक का केवल एक अंश, जसिका पुनर्रनवीनीकरण नहीं कयिा जा सकता (जैसे बहु-स्तरति बहु-सामग्री प्लास्टिक), एंड-ऑफ-लाइफ नपिटान के लयिे भेजे जाने के योग्य होगा।

प्लास्टिक अपशषिट से नपिटने के मार्ग की चुनौतियाँ

- **ड्राफ्ट EPR में 3P's की अनदेखी:**
 - **People:** आजीविका के दृष्टिकोण से देखा जाए तो प्लास्टिक अपशषिट प्रबंधन भारत में 1.5-4 मिलियन कचरा बीनने वालों की आय के लगभग आधे भाग का नरिमाण करता है।
 - उन्हें न केवल हतिधारकों के रूप में दशानरिदेशों से बाहर रखा गया है, बल्कि दशानरिदेशों में उत्पादकों को एक समानांतर

प्लास्टिक अपशष्टि संग्रह और रीसाइकलिंग शृंखला स्थापित करने के लिये नरिदेशित कयिा गया है, जो कचरा बीनने वालों को उनके आजीविका के साधनों से वंचित करेगा।

- **Plastic:** EPR दशानरिदेश प्लास्टिक पैकेजिंग तक सीमित है, जबकि उत्पादित प्लास्टिक का एक बड़ा हसिसा 'सगिल-यूज़' या 'थ्रोअवे प्लास्टिक पैकेजिंग' का भी है।
 - सैनटिरी पैड और पॉलियेस्टर जैसी अन्य बहु-सामग्री प्लास्टिक वस्तुओं को EPR के दायरे से बाहर रखा गया है।
- **Processing:** रीसाइकलिंग के अलावा वेस्ट-टू-एनर्जी, सह-प्रसंस्करण और भस्मीकरण (Incineration) जैसी अन्य प्रक्रियाएँ कार्बन डाइऑक्साइड और परटक्लिेट मैटर का उत्सर्जन करती हैं।
 - मसौदा नयिमों ने उन्हें बहु-स्तरित प्लास्टिक के नरितर उत्पादन को सही ठहराने के लिये वैध कर दयिा है।
- **बहु-स्तरित प्लास्टिक की समस्यऱ:** बहु-स्तरित और बहु-सामग्री वाले प्लास्टिक प्रचुर मात्रा में उपलब्ध प्रकार के प्लास्टिक अपशष्टि का नरिमाण करते हैं।
 - ये कम वजन एवं बड़े आकार के होते हैं और इस प्रकार इनका प्रबंधन एवं परविहन महंगा होता है। मुख्य रूप से खऱद्य पैकेजिंग में उपयोग कयिा जाने के कारण वे प्रायः कृन्तकों (Rodents) को आकर्षित करते हैं और इसके उनका भंडारण करना कठिन हो जाता है।
 - यदइस प्लास्टिक का संग्रह कर भी लयिा जाता है तो इनकी रीसाइकलिंग तकनीकी रूप से चुनौतीपूर्ण होती है, क्योंकि यह एक वषिम सामग्री है।
 - प्लास्टिक अपशष्टि प्रबंधन नयिम, 2016 दवारा इन प्लास्टिकों को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना अनविर्य कर दयिा गया था। लेकनि वर्ष 2018 में इस अधदिश को उलट दयिा गया।
- **अपर्याप्त कार्यान्वयन और नगिरानी:** प्लास्टिक अपशष्टि प्रबंधन (PWM) नयिम, 2016 की अधसिचना और वर्ष 2018 में कयिा गए संशोधनों के बावजूद स्थऱनीय नकिया, यहाँ तक कि सबसे बड़े नगर नगिम भी अपशष्टि के पृथक्करण के कार्यान्वयन और नगिरानी में वफिल रहे हैं।

आगे की राह

- **EPR दशानरिदेशों में सुधार का दायरा:** सरकार को अनौपचारिक शर्मिकों को शामिल करने के लिये दशानरिदेशों के मसौदे पर पुनरविचार करना चाहिये।
 - दशानरिदेशों के अंतरगत आने वाले प्लास्टिक के दायरे से उन प्लास्टिकों को बाहर करने के लिये बदलाव कयिा जा सकता है, जो पहले से ही कुशलतापूर्वक पुनरनवीनीकृत कयिा जा रहे हैं और इसके दायरे में अन्य प्लास्टिक एवं बहु-सामग्री वस्तुओं को शामिल कयिा जा सकता है।
- **अनौपचारिक क्षेत्र के कचरा बीनने वालों के लिये EPR फंड:** EPR फंड को अनौपचारिक क्षेत्र के शर्मिकों के मानचित्रण और पंजीकरण, उनके क्षमता नरिमाण, अवसंरचना के उन्नयन, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा देने और क्लोज़्ड लूप फीडबैक एवं नगिरानी तंत्र के नरिमाण के लिये उपयोग कयिा जा सकता है।
- **प्लास्टिक प्रबंधन के लिये चक्रीय अर्थव्यवस्था:** एक चक्रीय अर्थव्यवस्था एक क्लोज़्ड-लूप ससि्टम के नरिमाण और संसाधनों के उपयोग, कचरे के उत्पादन, प्रदूषण एवं कार्बन उत्सर्जन को न्यूनतम करने के लिये संसाधनों के पुनः उपयोग, साझाकरण, मरमत, नवीनीकरण, पुनः नरिमाण और पुनरचकरण पर नरिभर करती है।
 - चक्रीय अर्थव्यवस्था न केवल प्लास्टिक और वस्तुओं की वैश्विक धाराओं पर लागू होती है, बल्कि सतत् विकास लक्ष्यों की उपलब्धि में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती है।
- **पुनरचकरण योग्य प्लास्टिक के लिये बाज़ार मूल्य में वृद्धि करना:** लचीले प्लास्टिक पुनरचकरण योग्य होते हैं, लेकनि जैविक कचरे के साथ उनके दूषित होने के कारण पुनरचकरण की लागत उत्पादन के बाज़ार मूल्य के सापेक्ष नषिधात्मक रूप से महंगी होती है।
 - इस संबंध में पैकेजिंग में पुनरनवीनीकरण प्लास्टिक की माँग और उपयोग में वृद्धि कर इन प्लास्टिकों के बाज़ार मूल्य में वृद्धि की जा सकती है और इस प्रकार रीसाइकलिंग की मौजूदा लागत को समायोजित करने के लिये मूल्य सृजन कयिा जा सकता है।
- **व्यवहार परविरतन:** नागरिकों को व्यवहार में बदलाव लाना होगा और कचरा न फैलाकर और अपशष्टि पृथक्करण एवं अपशष्टि प्रबंधन में मदद करके योगदान करना होगा।
 - शक्ति और आउटरीच कार्यक्रमों के माध्यम से प्लास्टिक प्रदूषण से होने वाले नुकसान के बारे में जनता के बीच जागरूकता बढ़ानी होगी और उनके व्यवहार में बदलाव लाना होगा।
 - प्लास्टिक अपशष्टि के वरिद्ध एक आंदोलन को बहु-स्तरित पैकेजिंग, ब्रेड बैग, फूड रैप और प्रोटेक्टिव पैकेजिंग जैसे एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक में कमी लाने को प्राथमिकता देना होगा।

अभ्यास प्रश्न: भारत में प्लास्टिक अपशष्टि प्रबंधन की समस्यऱ से नपिटने के लिये कयिा जा सकने वाले उपायों की चर्चा कीजिये।